Water harvesting :-

वर्षा ऋतु में जब अधिक वर्षा होती है तो अतिरिक्त जल जो भूमि में नहीं लगता है उसे एकत्रित करना तथा एकत्रित जल को वाष्पीकरण एवं निस्पन्दन की हानियों से बचाकर कार्यक्रमों में उपयोग में लेना वाटर हारवेस्टिंग कहलाता है इस प्रकार से एकत्रित पानी का उपयोग मुख्यतः सिंचाई में तब किया जाता है जबकि फसलों को सिंचाई की आवश्यकता होती है।

इस विधि में पानी प्राकृतिक निचले क्षेत्रों तथा तालाबों में एकत्रित किया जाता है आवश्यकतानुसार ऐसे तालाबों का क्षेत्रफल एवं गहराई बढ़ाई जा सकती है तालाबों में एकत्रित जल की वाष्पीकरण से होने वाली जल की हानि को, क्षेत्रों में उपलब्ध पानी पर तैरने वाले पदार्थ का उपयोग करके करना चाहिए ताकि जल एवं वायुमण्डल का सम्पर्क टूट जाये जिससे वाष्पीकरण की क्रिया कम से कम होने पाये तालाब की निचली सतह से रिसाव द्वारा जल की हानि को रोकने के लिए अगर सम्भव हो तो निचली सतह को सीमेंट व कंक्रीट की सहायता से पक्का बनवा देना चाहिए अन्यथा तालाब की निचली सतह से जल की रिसाव की हानि को कम करने के लिए एक पर्त 8-10 सेमी मोटी मुरे की लगभग उसके ऊपर 8-10 सेमी मोटी पर्त चिकनी मिट्टी की लगा देनी चाहिए।

In Situ water harvesting

खेत में ही कुछ ऐसी प्रविधियां अपनाना जिससे वर्षा तथा अपधावन जल की अधिकाधिक मात्रा खेत में ही संचित की जाये इन सिटू वाटर हारवेस्टिंग कहलाती है।

In situ water harvesting के लिए निम्न प्रविधियां अपनाते हैं—

1. खेतों की मेड़बन्दी करके
2. खेतों की जुताई ढाल के विपरीत दिशा में करके।
3. कृत्रिम अवरोधों का अधिकाधिक प्रयोग करके।
4. गर्मी की गहरी जुताई करके।
5. पलवार का उपयोग करके।

उक्त प्रक्रियाओं का समाकलित उद्देश्य यह होता है अपधावन जल को जगह-जगह रोक दिया जाय तथा वर्षा जल की अधिकाधिक मात्रा खेत में ही शोषित हो जाय तथा प्रयुक्त पलवार अथवा कृत्रिम अवरोधों के कारक उसको वाष्पीकरण द्वारा कम से कम क्षति हो सके।